P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

संबंधों के टूटते मूल्य और राजेंद्र यादव की कहानियाँ

अंजू सिंह
अध्यापिका,
हिंदी विभाग,
खान्द्रा कॉलेज,
खान्द्रा

सारांश

शीर्षक–1950 के आसपास हिंदी कहानी के क्षेत्र में नई कहानी आन्दोलन का उदय हुआ। आजादी के बाद, औद्योगीकरण और शहरीकरण ने समाज और परिवार की बनी – बनाई रुढियों को तोड़ना शुरू कर दिया। नई कहानी इसी समकालीन व्यवस्था के प्रति विद्रोह का शंखनाद है। इसकी महती विशेषता है, उसका मनुष्य के प्रति प्रतिबद्ध होना और मनुष्यत्व को खोज निकालना। इस कहानी आन्दोलन के प्रमुख हस्ताक्षर में कथाकार राजेंद्र यादव ने अपनी कहानियों में मध्यवर्गीय पात्रों को प्रधानता दी हैं। मध्यवर्गीय नारी पात्रों में उन्होंने विवाहित, अविवाहित, घरेलू, कामकाजी महिलाओं का यथार्थ रूप में चित्रण किया है।

मुख्य शब्द : स्त्री चेतना, अस्तित्व, स्वतंत्रता, समाज, मध्यवर्ग, मानवीय मूल्य, संबंध।

प्रस्तावना

हिंदी कहानी अपने विकास क्रम में पुराने के अस्वीकार और नये को स्वीकार करती गयी, हिंदी कि प्रगतिशील चेतना का यह सबसे बड़ा प्रमाण है। राजेंद्र यादव नई कहानी आन्दोलन के पुरोधाओं में से थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान के निर्माण ने समाज के दमित और शोषित वर्ग के अधिकारों के लिए कई प्रावधानों की व्यवस्था की, उन्हें कई विशेषाधिकार मिले इसमे स्त्री और दलित दोनों ही आते है। अब स्त्री एक नए रूप में सामने आने लगी थी,और ये आधार मिल जाने से ये समस्यायें भी लोगों को ज्यादा उद्वेलित करने लगी। 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'खेल–खिलौने', 'प्रेत बोलते है' आदि ऐसे ही समय के बीच लिखी गयी ऐसी ही कहानियाँ हैं। आज लगभग 70 वर्षो बाद जब स्त्री अपने अधिकारों के लिए जाग चुकी हैं तब प्रश्न उठता है, क्या सही मायने में इतने वर्षो में स्त्री के जीवन में एक बड़ा फर्क आया है या फिर यह सिर्फ दिखावे का आवरण है।

अध्ययन का उद्देश्य

व्यवस्था में परिवर्तन आता है और यह परिवर्तन साधारणतः उत्पादन प्रणाली और आवंटन पद्धति पर निर्भर होता है। परन्तु इसमे संतुलन के न होने से समाज में विभिन्न वर्ग दिखायी पड़ते है। राजेंद्र यादव ने बड़ी बारीकी से इसका अध्ययन किया था और इसके परिणाम स्वरुप संबंधों में आ रहे परिवर्तन को कहीं न कहीं अपने कला चिंतन में समाहित किया था। संबंधों की जटिलताओं का उद्घाटन इस अध्ययन का अन्यतम लक्ष्य है।

नए कहानीकारों में एक महत्वपूर्ण नाम है– राजेंद्र यादव। इनका जन्म 28 अगस्त 1929 ई० को आगरा में हुआ था। इनके कहानी संग्रहों में– देवताओं की मूर्तियाँ (1951), 'खेल–खिलौने' (1953), 'जहाँ लक्ष्मी कैद है' (1957), 'अभिमन्यु की आत्महत्या' (1959), 'छोटे–छोटे ताजमहल '(1961), 'किनारे से किनारे तक '(1962), 'टूटना' (1966), 'टोल और अपने पार '(1986), वहाँ तक पहुँचने की दौड़, हासिल तथा अन्य कहानियाँ आदि है। राजेंद्र यादव ने अपने कथा साहित्य में मध्यवर्गीय पात्रों को प्रधानता दी है। मध्यवर्ग का प्रमुख आधार अर्थ है। गांव से शहरों की ओर कुच करते लोगों की आर्थिक स्थिति के परिवर्तित रूप ने इस वर्ग को जन्म दिया। हिंदी साहित्यकोष के अनुसार– "पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था ने समाज को इतना जटिल कर दिया है कि एक मध्यम वर्ग की आवश्यकता हुई, जो इस जटिल व्यवस्था के संगठन–सूत्र को संभाल सके। इस वर्ग में नौकरी–पेशा, शिक्षक, कलर्क और साधारण लोग आते हैं। मध्यम वर्ग विशेषतः वृद्धि– प्रधान वर्ग माना गया है, और सामाजिक क्रांति के प्रायः समस्त विचारों का सर्जन मध्यम वर्ग से ही होता है।"[1] इस वर्ग की स्त्रियों में नयी विचारधारा को अपनाने की विशेष ललक दिखाई देती है। ऐसा करते समय उन्हें परिवार और समाज का विरोध सहना पड़ता है लेकिन वे

हारती नहीं बल्कि इन समस्याओं से जूझकर उसका सामना करने का प्रयास करती है।

राजेंद्र यादव की कथा–चेतना, केंद्रीय संवेदना के रूप में टूटन को स्वीकार करती है। जो युग सन्दर्भ का कड़वा सच है। इनकी अधिकतर कहानियाँ व्यक्ति संबंधों पर आधारित है। राजेंद्र यादव के सृजन संसार पर–ष्टि डाले तो,उनका अधिकांश साहित्य, चाहे वह कहानी हो, उपन्यास हो या फिर आलोचना स्त्री और उसकी विडम्बनाओं को केंद्र में रखकर लिखा गया है, जैसे– कुलटा, अनदेखे अनजाने पुल, जहाँ लक्ष्मी कैद है, अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य आदि। ठीक भी है क्योंकि राजेंद्र यादव उस समय साहित्य सृजन कर रहे थे, जिस समय ये समस्याएँ मुखर होकर सामने आ रही थी। यह वह समय था जब शहरीकरण, औद्योगीकरण और टूटते संयुक्त परिवार ने जीवन को कठिन और जटिल बना दिया था। सामूहिक संस्थाओं की आखिरी कड़ी परिवार है, जहाँ व्यक्ति और उससे सम्बंधित व्यक्तियों के आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक संबंध परस्पर जुड़े हुए होते है। परिवार ही एक ऐसा बिंदु है, जिस पर खड़े होकर व्यक्ति और समाज के संबंधों को मापा जा सकता है। पारिवारिक मूल्यों का विघटन इतनी तेजी से होता है कि टूटने की प्रक्रिया खत्म होने पर भी जुड़ने की प्रक्रिया के लिए अवकाश ही नहीं बचता। सामाजिक मूल्यों के बिखराव के कारण व्यक्ति मूल्यों की दिशा समाजगत मूल्यों के बिलकुल विपरीत मोड़ ले रही है। स्त्री और पुरुष अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की रक्षा के लिए रिश्तों की सामाजिक–नैतिक धारणाओं से ऊपर उठकर, एक साथ रहते हुए जिंदगी में जीने के रहस्य को जानने की कोशिश कर रहे है। डा० भगवानदास वर्मा का कथन है– "स्त्री सेक्स और सामाजिक ढांचे में विद्रोह करने और अपने अस्तित्व की स्वतंत्र स्थिति प्रभावित करने के बावजूद समर्पिता की मुद्रा से उभर नहीं पायी है।"[2] पता नहीं प्रत्यक्ष जीवन में स्त्री समर्पिता की मुद्रा से उबरी है या नही परन्तु राजेंद्र यादव की कहानी 'टूटना', 'मेहमान', 'भविष्य के पार मडराता अतीत' आदि इसी तरह के बिषयों पर केन्द्रित हैं।

समय के साथ–साथ स्त्री पुरुष का संबंध संकट के दौड़ से गुजर रहा है। बदलते परिवेश और हालत ने सोच में परिवर्तन ला दिया है। स्त्री–पुरुष संबंधों में जो अलगाव आज हम देखते है,वैसा इससे पूर्व कभी नहीं हुआ था। राजेंद्र यादव की कहानी, नया फ्लैट स्त्री–पुरुष संबंधों पर आधारित कथा है। कहानी के केंद्र में श्वेता है। जो आधुनिक और शिक्षित नारी का प्रतिनिधित्व करती है। श्वेता का पति अशोक अपनी पत्नी की सुन्दरता के कारण कुंठित है। उसे यह लगता है कि अन्य लोग उसकी पत्नी की सुन्दरता विलासिता की नजरों से देखेंगे। " श्वेता कभी बाहर जाने को कहती तो अशोक या तो भड़क उठता या उसे समझाने लगता कि मैं चाहूँ भी तो इस ग्यारह बजे से पहले नहीं आ सकता– उस वक्त तुम्हे कहाँ ले जाऊं ? दरअसल वह डरता था। सुन्दर स्त्री को देखकर साले लार टपकाने लगेंगे।"[3] अशोक की इस प्रकार की सोच श्वेता की स्वच्छंदता के लिए बाधक है। श्वेता अशोक के मित्र मुकेश के संपर्क में आ जाती है और उसके साथ संबंध कायम होने के बाद भी उसे किसी प्रकार की ग्लानि नहीं होती। " घंटे भर बाद जब वह वापस कपडे पहन रही थी तो उसे लगा ही नहीं कि कुछ गलत हुआ है ? क्या वह अवचेतन में इसकी प्रतीक्षा कर रही थी।"[4] नारी स्वतंत्र है। वह भी प्रेम कर सकती है और अपने जीवन के प्रति निर्णायक–दृष्टि रख सकती है। इसी बदलाव को कहानी रेखांकित करती है। पास–फेल कहानी की बीना भी अपने प्रेम के प्रति अडिग रहती है। वह पिटकर भी कहती है, " शादी करेंगी तो विरेन्द्र से ..... नहीं तो जिंदगी भर कुंवारी रहेंगी।"[5] यहाँ भी बीना नये मूल्यों को स्वीकारती है। यहाँ आधुनिक नारी की स्वतंत्र सोच को कहानीकार ने चित्रित किया है।

नारी चेतना ने स्त्री की स्थिति उसकी मान्यताओं और संस्कारों को बहुत प्रभावित किया है। 'निरांजना' कहानी की नायिका निरांजना, प्रतिभा संपन्न उन्मुक्त स्वभाव की शिक्षित युवती है और अपनी योग्यता को विकसित करना चाहती है। वह भी परम्परागत विवाह प्रथा को अस्वीकार करती है और अंतरजातीय विवाह को स्त्री के लिए अधिक उपयुक्त समझती है। प्रोफेसर रविकुमार निरांजना की प्रतिभा से प्रभावित है। केवल सहानुभूति ही नहीं,स्नेह भी। जिसके तंतु उसे निरांजना से जोड़ते है। दास गुप्ता कहते हैं कि– "हम सभी जानते है, हमारे पारिवारिक संबंध भी आर्थिक सेतु पर निर्भर करते है, लेकिन हमेशा ही सब चीजों को उसी से थोड़े ही तौली जाती है। उसके ऊपर भावना की परते है जो उन संबंधों को मधुर रखती है और तभी परिवार चल सकता है।"[6] इसी भावना के कारण ही निरांजना माँ–बाप के निर्णय का विरोध कर कभी न लौटने के लिए प्रोफेसर के पास चली जाती है। उसका यह कदम बदलते जीवन–मूल्यों का संकेत है।

आधुनिकता क्या है? आधुनिकता वह विवेकशीलदृष्टि है, जो सड़ी–गली मान्यताओं को अस्वीकार कर स्वस्थ जीवन–मूल्यों को स्वीकारती है। अर्थात आधुनिकता अपने परिवेश के प्रति जागरूक रचनात्मक चेतना है। आज कि नारी ने आधुनिकता को अपना चरित्र बना लिया है तथा नारी चेतना, नारी शिक्षा, बदलते परिवेश के कारण प्राचीन संरचना और मूल्यों में बदलाव आया है। ' किनारे से किनारे तक ' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'प्रतीक्षा' की नायिका गीता प्रेमी से अलग होकर, पिता से विद्रोह कर अकेलेपन का दंश झेलती है। वह शहर में कार्यरत नंदा को अपने घर में रख लेती है। नंदा अपने विवाहित प्रेमी हर्ष की प्रतीक्षा में रहती है। नंदा का प्रेमी हर्ष जब उससे मिलने आता है, दोनों दम्पति के समान रहते है। उसकी अनुपस्थिति में गीता से उसके समलैंगिक संबंध स्थापित हो जाते है। गीता को हर्ष के चले जाने की प्रतीक्षा रहती है तथा हर्ष को अपनी पत्नी की मृत्यु की, इस प्रकार तीनों अपने–अपने अवसर की प्रतीक्षा में रहते है। यह कहानी भी मानवीय मूल्यों के टूटने के तथा संबंधों के खोखले आयाम को उघाडती है।

नए सवाल उठाती नई कहानी इस प्रगतिशील चेतना की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। नए कथाकारों ने अपनी कहानियों में समय की माँग के अनुरूप आदर्श का मोह त्याग यथार्थ का दामन थाम लिया और सब कुछ टूटता

बिखरता दिखाया अर्थात हम जो देखते, सुनते और महसूस करते है, वही सत्य है।

निष्कर्ष

राजेंद यादव सामाजिक संचेतना के कथाकार है, साथ ही साथ वे नए सत्य के उद्घाटन और मानवीय मूल्यों की खोज के प्रति प्रतिबद्ध भी दिखते है। उनकी कहानिया मध्यवर्ग के सामाजिक यथार्थ की संवेदनात्मक और कलात्मक अभिव्यक्ति के पक्षधर है। खेल–खिलोने, जहाँ लक्ष्मी कैद है, छोटे–छोटे ताजमहल तथा टूटना आदि कहानियां सामाजिक यथार्थ के साथ जीवन मूल्यों को व्यापक मानवीय धरातल पर प्रस्तुत करती है। एकाकीपन, वैयक्तिक प्रेम, नारी–पुरुष के नए संबंध, संबंधों की टूटन आदि इनकी कहानियों के प्रमुख आयाम है। वे सामाजिक नैतिकता की अपेक्षा वैयक्तिक नैतिकता को अधिक महत्व देते हैं। मानव मन की सहज मनः स्थितियों का सूक्ष्म चित्रण करने में राजेंद्र यादव सफल कथाकार हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हिंदी साहित्य कोश भाग–2, डा० धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लि०, वाराणसी, पृ०–564*
2. *कहानी की संवेदनशीलता सिद्धांत, डा० भगवानदास वर्मा, ग्रंथम रामबाग, कानपुर, 1972, पृ०–202*
3. *हासिल और अन्य कहानियाँ, राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ०–46*
4. *वहीँ, पृ०–48*
5. *छोटे–छोटे ताजमहल, राजेन्द्र यादव, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1961, पृ०–67*
6. *छोटे–छोटे ताजमहल, राजेन्द्र यादव, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1961, पृ–60।*